

६. कलम का सिपाही (प्रेमचंद पर केंद्रित रेडियो रूपक)

– डॉ. सुनील केशव देवधर

लेखक परिचय : सुनील केशव देवधर जी का जन्म २१ जुलाई १९५६ को छतरपुर (मध्य प्रदेश) में हुआ। आपने बी.सी.जे. (पत्रकारिता) एम.ए. (अर्थशास्त्र, हिंदी) तथा बुंदेलखंड विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। रोचकता आपके रेडियो रूपक लेखन की विशेषता है। अभिनय तथा संवाद लेखन के रूप में आप फिल्मों से भी जुड़े हुए हैं। आप ऐसे सृजनधर्मी हैं जो आकाशवाणी के कार्यक्रमों को साहित्यिक रूप देने की क्षमता रखते हैं।

प्रमुख कृतियाँ : ‘मत खींचो अंतर रेखाएँ’ (काव्य संग्रह), ‘मोहन से महात्मा’, ‘आकाश में घूमते शब्द’ (रूपक संग्रह) ‘संवाद अभी शेष हैं’, ‘संवादों के आईने में’ (साक्षात्कार) आदि।

विधा परिचय : ‘रेडियो रूपक’ एक विशेष विधा है, जिसका विकास नाटक से हुआ है। रेडियो रूपक का क्षेत्र विस्तृत है। दृश्य-अदृश्य जगत के किसी भी विषय, वस्तु या घटना पर रूपक लिखा जा सकता है। इसके प्रस्तुतीकरण का ढंग सहज, प्रवाही तथा संवादात्मक होता है। विकास की वास्तविकताओं को उजागर करते हुए जनमानस को इन गतिविधियों में सहयोगी बनने की प्रेरणा देना रेडियो रूपक का उद्देश्य होता है। विष्णु प्रभाकर, लक्ष्मीनारायण लाल, रेखा अग्रवाल, कन्हैयालाल नंदन, लोकनंदन, सोमदत्त शर्मा आदि ने रेडियो रूपक को समृद्ध करने में अपना योगदान दिया।

पाठ परिचय : प्रस्तुत ‘रेडियो रूपक’ उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी पर आधारित है। किसान और मजदूर वर्ग के मसीहा प्रेमचंद जी की रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं। साहित्य द्वारा प्रेमचंद जी ने जीवन के मूल तत्त्वों और सत्य को सामंजस्यपूर्ण दृष्टि से प्रस्तुत किया है। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से समाज को विकास की दिशा प्रदान करना ही उनकी साहित्य रचनाओं का उद्देश्य है। लेखक ने यहाँ साहित्यकार प्रेमचंद जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।



(लोकसंगीत के ध्वनि प्रभाव के साथ स्वर का उभरना।)

- प्रथम स्वर :** हिंदी के उपन्यास तथा कहानी की विकास यात्रा, सामयिक जीवन की विशालता, अभिव्यक्ति का खरापन, पात्रों की विविधता, सामाजिक अन्याय का घोर विरोध, मानवीय मूल्यों से मित्रता और संवेदना, साहित्य की साधना, धन का शत्रु और किसान वर्ग का मसीहा-यानी मुंशी प्रेमचंद !
- द्वितीय स्वर :** मुंशी प्रेमचंद जिन्होंने अपने युग की चुनौतियों को सामाजिक धरातल पर स्वीकारा और नकारा। उन्होंने इन समस्याओं और मान्यताओं के जीते-जागते चित्र उपस्थित किए जो मध्यम वर्ग, किसान, मजदूर, पूँजीपति, समाज के दलित और शोषित व्यक्तियों के जीवन को संचालित करती हैं।
- प्रथम स्वर :** उनका साहित्य सृजन विपुल था लेकिन विपुलता ने उनके लेखन की गुणवत्ता को कभी ठेस नहीं पहुँचाई, उपन्यास हो अथवा कहानी, उसमें कहीं भी कोई कमी नहीं आने दी।
- द्वितीय स्वर :** समय की धड़कनों से जुड़े, सजग आदर्शवादी और साथ ही प्रामाणिकता के संवेग को अपने-आप में धारण करने वाले, इस कलम के सिपाही के कृतित्व की स्थायी देन की ऐसी मुहावरेदार और सहज भाषा है, जो पहले कभी नहीं थी। साथ ही, उनका लेखन आज भी प्रासंगिक लगता है।
- प्रथम स्वर :** उनके साहित्य का मूल स्वर है - 'डरो मत' और जो साहित्यकार अपने युग को अभय नहीं देता, वह किसी भी अन्याय से जूझने की शक्ति नहीं देता, और जो ऐसी शक्ति नहीं देता, वह युग जीवन का संगी नहीं हो सकता। उन्होंने युग को जूझना सिखाया है, लड़ना सिखाया है।
- द्वितीय स्वर :** लेकिन प्रेमचंद आज भी जीवन से जुड़े हुए हैं, वे युगजीवी हैं और युगांतर तक मानवसंगी दिखाई पड़ते हैं - यही कारण है कि आज प्रेमचंद और उनका साहित्य सभी जगह परिसंवाद, परिचर्चा का विषय है।
- प्रथम स्वर :** चाहे शिक्षा संबंधी आयोजन हो या विचार गोष्ठी अथवा संभाषण, प्रेमचंद की विचारधारा, उनके साहित्य तथा प्रासंगिकता पर जरूर बात की जाती है। यही तो उनके साहित्य की विशेषता है।

ध्वनि प्रभाव : (तालियाँ)

- प्रवक्ता :** (वक्तव्य की शैली में) आज जब हम प्रेमचंद की बात करते हैं तो अपने-आप ही सामाजिक व्यवस्था के कई पहलू भी हमारे सामने आ जाते हैं जो कि प्रेमचंद की प्रासंगिकता को उजागर करते हैं। प्रेमचंद यदि आज भी प्रासंगिक और महान हैं तो वह इसलिए कि उन्होंने किसानों के मानसिक गठन और मध्यम वर्ग तथा दलित और पिछड़े हुए लोगों के दृष्टिकोण को उस समय गहरे विश्वास और उत्साह के साथ वाणी दी जिस समय इस देश के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में इसकी आवश्यकता अनुभव की जा रही थी और उथल-पुथल हो रही थी। वह तब का समय था लेकिन तब से आज तक लगातार हम किसान, पिछड़े वर्ग और शोषित वर्ग के कल्याण की जिम्मेदारी अनुभव कर रहे हैं तो क्या आज की स्थिति पर प्रेमचंद पहले से ही विचार करते हुए नहीं दिखाई देते ! उनकी कृतियों में आर्थिक शोषण और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध कृषक वर्ग की घृणा और कटुता की झलक मिलती है।

प्रेमचंद का व्यक्तित्व तब सबसे अधिक विकसित होता है जब वह निम्न मध्यवर्ग और कृषक वर्ग का चित्रण करते हुए अपने युग की प्रतिगामी शक्तियों का भी विरोध करते हैं और एक श्रेष्ठ विचारक और समाज सुधारक के रूप में प्रकट होते हैं। इनका विचारक जिसे इनके साहित्यकार से अलग नहीं किया जा सकता, बदलती परिस्थितियों के अनुरूप तथा निजी अनुभूतियों के कारण बदलता भी रहा है और इसीलिए यह मूलतः सामाजिक होकर भी अपना कलेवर बदलता रहता है। प्रेमचंद का जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण है, वह 'पूँस की रात' और 'कफन' कहानियों में एक नया मोड़ लेता है। उनकी संवेदना

‘गोदान’ उपन्यास में नए साँचे में ढलने लगती है। प्रेमचंद ने कभी अपने को किसी सीमा में नहीं बाँधा। उनकी जीवन दृष्टि बदलती रही। इसीलिए कभी वे मानवतावादी, कभी वे सुधारवादी, कभी प्रगतिवादी, तो कभी गाँधीवादी मालूम पड़ते हैं लेकिन सत्य यह है कि प्रेमचंद कभी किसी वाद को लेकर नहीं चले, न तो वादी होकर जीए और न ही वादी होकर मरे। सच तो यह है कि वे सतत गतिशील रहे हैं। कहीं भी चूकते नजर नहीं आते, निःशेष नहीं होते। इसीलिए वे हर काल में प्रासंगिक हैं।

..... (तालियाँ)..... संगीत –

प्रथम : प्रेमचंद उन सामाजिक परिस्थितियों और मानव वृत्तियों से बखूबी परिचित थे जो जीवन में सदैव ही घटित होती रहती हैं। उन्होंने देखा था कि किस प्रकार गैरकानूनी तरीके से किसानों को उनके खेतों से बेदखल किया जाता है।

द्वितीय : ‘गोदान’ का होरी ऐसे ही किसान का चरित्र है जो भूख, बीमारी, उपेक्षा और मौत से लड़ता रहा है।

प्रथम : लेकिन दूसरी ओर अलोपीदीन जैसे कालाबाजारी, समाज के ठेकेदार और दीनों के शोषक को गिरफ्तार करने वाला नमक का दरोगा भी है जो किसी भी हाल में अपने ईमान को बेचता नहीं है और पुलिस महकमे की सत्यनिष्ठा और दृढ़ता को उभारता है।

ध्वनि प्रभाव : (बैलगाड़ी-बैलों की घंटियाँ)

अलोपीदीन : बाबू जी कहिए ! हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ जो गाड़ियाँ रोक दीं।

वंशीधर : ये सरकारी हुकुम है, गाड़ियाँ नहीं जाएँगी।

अलोपीदीन : (हँसकर) हमारे सरकार तो आप हैं, यह तो घर की बात है भला। हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं। ऐसा कैसे संभव है कि हम इस घाट से गुजरें और देवता को कुछ न चढ़ाएँ। आपने व्यर्थ कष्ट किया, मैं तो खुद ही आपके पास आ रहा था आपके लिए चढ़ावा लेकर।

वंशीधर : हम उनमें से नहीं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेच दें, आप मेरी हिरासत में हैं, आपका चालान होगा।

अलोपीदीन : (गिड़गिड़ाकर) बाबू साहब, ऐसा मत कहिए, हम मिट जाएँगे। इज्जत माटी में मिल जाएगी, हमारा अपमान करके आपको क्या मिल जाएगा ? मान जाइए।

वंशीधर : (कठोर स्वर) मैं ऐसी कोई बात सुनना नहीं चाहता।

अलोपीदीन : (करुण स्वर) मुख्तार जी, १००० के नोट बाबू साहब को भेंट करो।

वंशीधर : (कड़ककर) सेठ अलोपीदीन, एक हजार नहीं, एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते।

अलोपीदीन : आपकी मर्जी, इससे ज्यादा का मेरा सामर्थ्य नहीं।

वंशीधर : बदलूसिंह ! तुम देखते क्या हो, हिरासत में लो।

अलोपीदीन : बाबू साहब, ईश्वर के लिए मुझपर दया कीजिए, मैं पच्चीस हजार पर निपटारा करने के लिए तैयार हूँ।

वंशीधर : मैंने कहा न, असंभव बात है।

अलोपीदीन : तीस हजार।

वंशीधर : नहीं, नामुमकिन है।

अलोपीदीन : क्या कहा हुजूर, चालीस पर भी नहीं।

वंशीधर : चालीस हजार नहीं, चालीस लाख पर भी नहीं, बदलूसिंह, इस आदमी को अभी हिरासत में लो। मैं एक शब्द भी सुनना नहीं चाहता। यह समझता क्या है मुझे।

ध्वनिप्रभाव : (बैलगाड़ियों का)

- प्रथम स्वर** : तो ऐसा है, प्रेमचंद का पात्र, कहानी का नायक जिसे कोई भी प्रलोभन आकर्षित नहीं कर पाता। क्या आज भी हम ऐसी दृढ़ता और ईमानदारी की अपेक्षा नहीं करते ?
- द्वितीय स्वर** : कहते हैं, साहित्यकार के साहित्य पर उसके व्यक्तित्व की छाप होती है। तो क्या प्रेमचंद अपने व्यक्तिगत जीवन में इतने ही दृढ़ और सहज थे ?
- प्रथम स्वर** : निःसंदेह वे लेखक के नाते तो महान हैं ही मनुष्य के नाते तो वे और भी महान हैं। देखने में वे किसी भी तरह बड़े नहीं मालूम पड़ते थे। उनकी दुबली-पतली साधारण-सी देह उनके द्वारा झेले गए कष्टों की सूचना देती थी। भाग्य कभी उनके अनुकूल नहीं रहा।
- द्वितीय स्वर** : दूसरों के हृदय को मोहने वाला उनका आचरण, सीधा-सादा ढंग, सहज बर्ताव इन सब बातों ने उनको अपरिचित और परिचित की दृष्टि में उठा दिया था। उनमें सदैव बालकों-सा भोलापन और सरलता थी।
- प्रथम स्वर** : प्रेमचंद की सबसे बड़ी विशेषता है उनकी कहानियों और नाटकों में व्याप्त मानवीय संवेदना।
- द्वितीय स्वर** : अमर कथासाहित्य की रचना के साथ-साथ उन्होंने युग जीवन के सभी पक्षों पर अपनी नजर डाली। युग चेतना के लिए 'जागरण' निकाला। विभिन्न भाषाओं के साहित्य को एक-दूसरे से परिचित कराने के लिए 'हंस' का प्रकाशन किया। उनकी साहित्यिक महत्वाकांक्षाएँ सर्वोपरि थी।
- प्रथम स्वर** : उनका प्रगतिशील आंदोलन, विचारोत्तेजक निबंध, व्याख्यान आदि ने साहित्य भाषा और साहित्यकार के दायित्व की ओर जनसाधारण का ध्यान आकर्षित किया और साथ ही संदर्भ और समाधान भी दिए।
- द्वितीय स्वर** : और यही कारण है कि जहाँ कहीं भी साहित्य प्रेमी मिल बैठते हैं, वहाँ प्रेमचंद के व्यक्तित्व, कृतित्व, प्रासंगिकता, उनके उपन्यास, कहानियों और पात्रों के अलावा उनकी विचारधारा, प्रगतिशीलता आदि पर खुली बहस होती है। उनके उपन्यास व कहानियाँ ही नहीं, पात्र तक लोकप्रिय हुए हैं।

(परिवर्तन संगीत)

(परिचर्चा शैली में बातचीत)

- सुधीर** : जहाँ तक मैंने प्रेमचंद को पढ़ा है तो भाई मैं तो यही कहूँगा कि उन्होंने अपने साहित्य में किसी निरुद्देश्य रूप का सृजन नहीं किया। अपनी प्रत्येक रचना में किसी-न-किसी समस्या को उठाया है और यहाँ तक कि अपने विचार के अनुसार उसके समाधान की ओर भी इशारा किया है।
- मधु** : मैं आपके विचार से सहमत हूँ मगर एक बात मेरे देखने में आती है कि प्रेमचंद स्वयं देहात में पले, पैदा हुए, गरीबी में जिए और उनके उपन्यासों में देहाती जीवन का ही चित्रण है चाहे, उनका उपन्यास 'गोदान' हो या कहानियों में 'कफन', 'ईदगाह' या 'बूढ़ी काकी'। कहिए संजय जी, आपका क्या ख्याल है-
- संजय** : यह बात तो सच है कि मुख्य चित्रण तो ग्रामीण जीवन का ही है मगर 'प्रतिज्ञा', 'निर्मला' और 'सेवासदन' कुछ ऐसे उपन्यास भी हैं जो मुख्यतः शहरी जीवन को लेकर ही चलते हैं।
- मधु** : आपने 'निर्मला' उपन्यास का नाम लिया तो मुझे प्रेमचंद का नारी के प्रति क्या दृष्टिकोण है? वे उसे कैसा प्रस्तुत करते हैं? इस बारे में भी थोड़ा ख्याल आ गया।
- सुधीर** : आपने ठीक कहा मधु जी, इस उपन्यास में हम भारतीय नारी की समस्या को मूर्त पाते हैं। निर्मला एक ऐसी स्त्री है जो परंपराओं, रूढ़ियों, धर्म और कर्मकांडों में जकड़ी हुई है और वह किसी भी तरह अपनी मुक्ति नहीं कर पाती।

- मधु** : और आज भी क्या भारतीय नारी उतनी स्वतंत्र है, जितनी समझी जाती है?
- संजय** : लगता है, अब मधु जी अन्य बातों पर तो बोलने ही नहीं देगी। अच्छा मधु जी, आप ही बताइए क्या प्रेमचंद को आप किसी वाद से जुड़ा पाती हैं?
- मधु** : जहाँ तक मैं सोचती हूँ कि कोई भी साहित्यकार अपने सामयिक वातावरण से प्रभावित होता अवश्य है मगर प्रेमचंद किसी एक धारा या वाद में बँधकर नहीं चले।
- सुधीर** : इस संबंध में मैं तो यह कहूँगा कि वे वास्तविकता की ओर अग्रसर हो रहे थे। उनकी रचनाओं में वास्तविकता की ओर क्रमिक यात्रा हम देख सकते हैं तो फिर उन्हें वस्तुवादी भी कहा जा सकता है।
- संजय** : हाँ यह तो ठीक ही है।

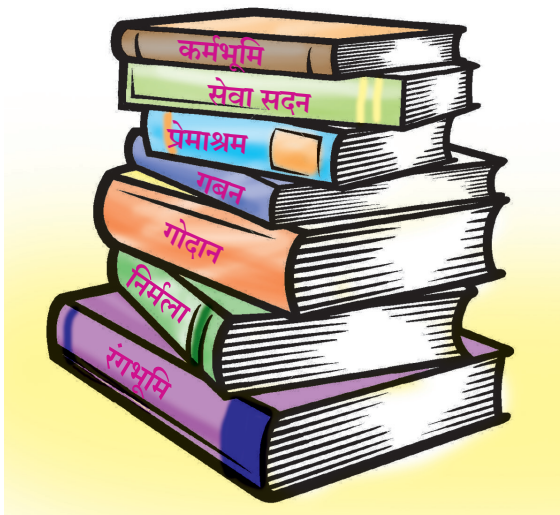
(परिवर्तन सूचक ध्वनि प्रभाव)

- प्रथम स्वर** : प्रेमचंद ने मनोरंजन या झूठे सपने संबंधी जिज्ञासा शांत करने के लिए उपन्यास, कहानियों की रचना नहीं की।
- द्वितीय स्वर** : कला के बारे में उनकी भावना उदात्त थी, जीवन की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के संबंध में उनके जो विचार थे, उनको व्यक्त करने का साधन ही वह कला को मानते थे।
- प्रथम स्वर** : वे सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को प्रमुखता देते हैं और ये समस्याएँ उनके वर्णन, पात्र, कथावस्तु या कहानी के अन्य तत्वों पर शासन करती हैं। वे सामाजिक जीवन के चितरे हैं, उनका मूल उद्देश्य उस समाज के क्रमिक विकास के दर्शन कराना है जो सामाजिक रूढ़ियों पर आधारित है।
- द्वितीय स्वर** : वे एक ऐसी समाज व्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं जिसमें जरूरतें पूरी करने के अवसर होंगे और विकास की सुविधाएँ। इसी सामाजिक उद्देश्य से उनका चिंतन प्रेरित था और कला अनुप्राणित थी।
- प्रथम स्वर** : उन्होंने साहित्य, समाज और राजनीति के क्षेत्र में जो क्रांति का बीज बोया था, वह आज प्रस्फुटित हो चुका है, जो आगे चलकर विशाल वटवृक्ष में परिणत होगा। जिसकी छाया में सुखी राष्ट्र का निर्माण होगा। उनके साहित्य में जागृति की औषधि है, जिसकी नींव पर साहित्य का विशाल भवन खड़ा होगा।
- द्वितीय स्वर** : प्रेमचंद का साहित्य ही कालजयी नहीं, वे स्वयं भी कालजयी हैं।

(संगीत के ध्वनि प्रभाव से समाप्त)

(‘मोहन से महात्मा तथा अन्य रूपक’ रेडियो रूपक संग्रह से)

— ० —



शब्दार्थ :

चालान = दंड
हिरासत = कैद

वस्तुवादी = भौतिकवादी
अनुप्राणित = प्रेरित, समर्थित

स्वाध्याय

आकलन

१. लिखिए :

(अ) प्रेमचंद का व्यक्तित्व अधिक विकसित होता है, जब

(१)

(२)

(आ) प्रेमचंद लिखित निम्नलिखित रचनाओं का वर्गीकरण कीजिए -

(कफन, प्रतिज्ञा, बूढ़ी काकी, निर्मला, नमक का दरोगा, गोदान, रंगभूमि, सेवासदन)

कहानी	उपन्यास
.....	
.....	
.....	
.....	

(इ) निम्नलिखित पात्रों की विशेषताएँ -

(१) होरी

(२) अलोपीदीन

(३) वंशीधर

शब्द संपदा

२. निम्नलिखित भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए :

(१) अपत्य -

अपथ्य -

(२) कृपण -

कृपाण -

(३) श्वेत -

स्वेद -

(४) पवन -

पावन -

(५) वस्तु -

वास्तु -

(६) व्रण -

वर्ण -

(७) शोक -

शौक -

(८) दमन -

दामन -

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'वर्तमान कृषक जीवन की व्यथा', इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

(आ) 'ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा सफलता के सोपान हैं', इस विषय पर अपना मत लिखिए।

पाठ पर आधारित लघूत्तरी प्रश्न

४. (अ) रूपक के आधार पर प्रेमचंद जी की साहित्यिक विशेषताएँ लिखिए।
(आ) पाठ के आधार पर ग्रामीण और शहरी जीवन की समस्याओं को रेखांकित कीजिए।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. जानकारी दीजिए :

(अ) डॉ. सुनील केशव देवधर जी लिखित रचनाएँ –

.....
.....

(आ) रेडियो रूपक की विशेषताएँ –

.....
.....

६. कोष्ठक की सूचना के अनुसार काल परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए –

(१) मछुवा नदी के तट पर पहुँचा। (सामान्य वर्तमानकाल)

.....

(२) एक बड़े पेड़ की छाँह में उन्होंने वास किया। (अपूर्ण वर्तमानकाल)

.....

(३) आदमी यह देखकर डर गया। (पूर्ण वर्तमानकाल)

.....

(४) वे वास्तविकता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। (सामान्य भूतकाल)

.....

(५) उन लोगों को अपनी ही मेहनत से धन कमाना पड़ता है। (अपूर्ण भूतकाल)

.....

(६) बबन उसे सलाम करता है। (पूर्ण भूतकाल)

.....

(७) हम स्वयं ही आपके पास आ रहे थे। (सामान्य भविष्यकाल)

.....

(८) साहित्यकार अपने सामयिक वातावरण से प्रभावित हो रहा है। (सामान्य भूतकाल)

.....

(९) आकाश का प्यार मेघों के रूप में धरती पर बरसने लगता है। (पूर्ण वर्तमानकाल)

.....

(१०) आप सबको जीत सकते हैं। (सामान्य भविष्यकाल)

.....